



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)
PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्रतिष्ठित से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 309]
No. 309]

नई दिल्ली, सोमवार, जून 20, 1994/ज्येष्ठ 20, 1916
NEW DELHI, MONDAY, JUNE 20, 1994/JYAISTHA 20, 1916

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)
(वैकिंग प्रभाग)
अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 जून, 1994

का.आ.458(अ).—केन्द्रीय सरकार, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उस धारा की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए आवेदन पर विचार करने के पश्चात् काफी नाथ सेट बैंक लिमिटेड की बाबत 20 जून, 1994 को कार्रवाई की समाप्ति से तारीख 19 सितम्बर, 1994 तक जिसके अवसर्गन यह तारीख की है, की कालावधि के लिये अधिस्थगन आदेश करती है और एतद्वारा अधिस्थगन की कालावधि के दौरान उस बैंककारी कंपनी के निरूद्ध सभी कार्रवाईयाँ और कार्यवाहियों के प्रारम्भ करने या चालू रखने को इस शर्त के अधीन रहते हुए स्थगित करती है कि ऐसे स्थगन से उक्त अधिनियम की धारा 35 की उपधारा (4) के खंड (ख) के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा उसकी शक्तियों के प्रयोग पर या उक्त अधिनियम की धारा 38 के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उसकी शक्तियों के प्रयोग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

2. केन्द्रीय सरकार एतद्वारा यह भी निदेश देती है कि काफीनाथ सेट बैंक लिमिटेड को मंजूर की गयी अधिस्थगन की कालावधि के दौरान, वह बैंक भारतीय रिजर्व बैंक की लिखित अनुज्ञा के बिना,—

(क) अपने दायित्वों और बाध्यताओं निवृत्त में या अन्यथा कोई उधार या अतिम नहीं देगा, कोई दायित्व उपगत नहीं करेगा, कोई विनिधान नहीं करेगा या किसी संदाय के लिए करार या उसका संवितरण नहीं करेगा या उसमें इसके पश्चात् उपबंधित विस्तार और रीति के सिवाय कोई समझौता या ठहराव नहीं करेगा :—

(i) प्रत्येक दसत बैंक या चालू खाते में या किसी अन्य निक्षेप में चाहे वह किसी भी नाम से शात हो, 8 सितम्बर, 1993 से संघीय बैंकिंग निगम अधिनियम के 5000/-रुपये से अधिक राशि परन्तु यह तब जब कि ऐसी कोई रकम ऐसे किसी निक्षेपकर्ता को जो किधो रूप में बैंक का ऋणी है, संवत् नहीं की जाएगी।

(ii) कोई ऐसा व्यय जो उक्त बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध फारस किए गए किसी वाद या अपील के संबंध में या बैंक द्वारा अधिधान डिब्री के संबंध में या उसको देय किसी रकम की श्रूल करने के लिए आवश्यक रूप से उपगत किया जाना है, परन्तु यदि ऐसे प्रत्येक वाद या अपील या डिब्री या कामवाही की बाबत व्यय 2500 रुपये से अधिक है तो भारतीय रिजर्व बैंक का लिखित अनुज्ञा इसके उपगत किए जाने से पूर्व अधि-पाप्त की जाएगी;

(iii) किसी अन्य मद्र पर कोई अन्य व्यय जहां तक वह बैंककारी कंपनी के प्रतिष्ठित के प्रशासन या संचालन करने के लिए बैंक-कार्य कंपनी की राय में आवश्यक है, परन्तु जहां किसी मैनेजर या मद्र में किसी मद्र पर कुल व्यय, अधिस्थगन के आदेश के पूर्व

छह कैलेंडर मास के दौरान उस मब के मद्दे औसत मासिक व्यय से अधिक है या जहाँ उक्त अवधि के दौरान उस मब के मद्दे कोई व्यय उपगत नहीं हुआ है, और ऐसे में मब पर व्यय 2500 रुपये से अधिक है वहाँ भारतीय रिजर्व बैंक की लिखित अनुज्ञा अतिरिक्त व्यय उपगत किए जाने के पूर्व अभिप्राय की जाएगी;

(iv) उक्त बैंक द्वारा जारी किए गए कोई ड्राफ्ट या संदाय आदेशों की कोई रकम और जो उस तारीख को जिसको अधिस्थगन आदेश प्रवृत्त होता है, असंबत रह जाती है; और

(v) तारीख 20 जून, 1994 को या उससे पूर्व संग्रहण के लिए प्राप्त और उस तारीख के पूर्व को या उसके पश्चात् वसूल किए गए बिलों की रकम।

(ख) अपनी स्थावर संपत्ति का विक्रय, अंतरण या उसका अन्यथा व्ययन नहीं करेगा।

3. केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा यह भी निवेश देती है कि काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड उसे मंजूर की गयी स्थगन की कालावधि के दौरान निम्नलिखित और संदाय, अर्थात् काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड को भारतीय रिजर्व बैंक या भारतीय स्टेट बैंक या इसके किसी समनुवर्ती या किसी अन्य बैंक द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों या अन्य प्रतिभूतियों के विरुद्ध उधारों या प्रविधियों के प्रविधाय के लिए मंजूर की गयी राशिओं, और जो उस तारीख को जिसको अधिस्थगन आदेश प्रवृत्त होता है, असंबत है, अतिरिक्त संदाय कर सकता है।

4. केन्द्रीय सरकार, एतद्द्वारा यह और निवेश देती है कि अधिस्थगन की कालावधि के दौरान काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड, पूर्वोक्त संदाय करने के प्रयोजन के लिये भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अन्य बैंक के पास अपना खाता चलाने के लिए अनुज्ञात होगा, परन्तु इस आदेश की किसी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह भारतीय रिजर्व बैंक या किसी अन्य पूर्वोक्त बैंक से अपना यह समाधान करने की अपेक्षा करती है कि इस आदेश द्वारा अधिरोपित शर्तों का काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड के पक्ष में कोई रकम जारी किए जाने से पूर्व पालन किया जा रहा है।

5. केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा यह और निवेश देती है कि काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड, अधिस्थगन की कालावधि के दौरान, ऐसे किसी बिलों को, जिनकी वसूली नहीं हुई है, उसको प्राप्त करने के लिए हकदार व्यक्ति को उस व्यक्ति द्वारा इस निमित्त किए गए अनुरोध पर उस दशा में वापस लौटा सकेगा यदि बैंक का ऐसे बिलों में कोई अधिकार या हक या हित नहीं है।

6. केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा यह भी निवेश देती है कि काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड, ऐसे माल या प्रतिभूतियों को निर्मुक्त या परिवर्तन कर सकेगा जो किसी उधार, नकद प्रत्यय या ओवरड्राफ्ट लिये इसके पास गिरवी रखा गया है, भाडामाल या बंधक या अन्यथा प्रचारित किया गया है:—

(i) किसी ऐसी दशा में जिसमें, यथास्थिति, उधार लेने वाले या उधार लेने वालों से देय सभी रकमों के मद्दे पूर्णसंदाय बैंक द्वारा बिना शर्त के प्राप्त कर लिया गया है; और

(ii) किसी अन्य दशा में, अनुबंधित अनुपातों या ऐसे अनुपातों से, जो अधिस्थगन आदेश के प्रवृत्त होने से पूर्व रखे गए थे, इन दोनों में से जो भी उच्चतर हो, नीचे उक्त माल या प्रतिभूतियों पर सीमाओं के अनुपात को कम किए बिना ऐसी माल तक जो आवश्यक या संभव हो।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th June, 1994

G.O. 458(E).—In exercise of the powers conferred by Sub-section (2) of Section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government, after considering an application made by the Reserve Bank of India under Sub-section (1) of that section, hereby makes an order of moratorium in respect of the Kashi Nath Seth Bank Ltd. for the period from the close of business on the 20th June, 1994 upto and inclusive of the 19th September, 1994 and hereby stays the commencement or continuance of all actions and proceedings against that banking company during the period of moratorium, subject to the condition that such stay shall not in any manner prejudice the exercise by the Central Government of its powers under clause (b) of sub-section (4) of section 35 of the said Act or the exercise by the Reserve Bank of India of its powers under section 38 of the said Act.

2. The Central Government hereby also directs that during the period of moratorium granted to it, the Kashi Nath Seth Bank Ltd. shall not, without the permission in writing of the Reserve Bank of India,—

(a) Grant any loan or advance, incur any liability, make any investment or agree to or disburse any payment, whether in discharge of its liabilities and obligations or otherwise, or enter into any compromise or arrangement, except to the extent and in the manner provided hereunder :

(i) A sum not exceeding Rs. 5,000 of the total balance in every savings bank or current account or in any other deposit by whatever name called inclusive of the amount paid since September 8, 1993, and provided further that no amount shall be paid to any depositor who is indebted to the bank in any way;

(ii) any expenditure which has necessarily to be incurred in connection with any suits or appeals filed by or against or decrees obtained by the said bank or for realising any amounts due to it, provided that if the expenditure in respect of each such suit

or Appeal or decree or proceeding is in excess of Rs. 2,500, the permission in writing of the Reserve Bank of India shall be obtained before it is incurred;

- (iii) any expenditure on any other item in so far as it is in the opinion of the banking company necessary for carrying on the day-to-day administration of the banking company, provided that where the total expenditure on any item in any calendar month exceeds the average monthly expenditure on account of that item during the six calendar months preceding the order of moratorium, or if no expenditure has been incurred on account of that item in the past exceeds a sum of Rs. 2,500, the permission in writing of the Reserve Bank of India shall be obtained before the additional expenditure is incurred;
 - (iv) the amounts of any drafts or pay orders issued by the said bank and remaining unpaid on the date on which the order of moratorium comes into force; and
 - (v) the amounts of the bills received for collection on or before the 20th June, 1994 and realised before, on or after that date.
- (b) sell, transfer or otherwise dispose of any of its immovable properties.

3. The Central Government hereby also directs that the Kashi Nath Seth Bank Ltd. may, during the period of the moratorium granted to it, make the following further payments, namely, the amounts for repaying loans or advances granted against Government securities or other securities, to the Kashi Nath Seth Bank Ltd. by the Reserve Bank of India or the State Bank of India or any of its subsidiaries or by any other bank and remaining unpaid on the date on which the order of moratorium comes into force.

4. The Central Government hereby further directs that during the period of moratorium the Kashi Nath Seth Bank Ltd. shall be permitted to operate its accounts with the Reserve Bank of India or with any other bank for the purpose of making payments aforesaid, provided that nothing in this order shall be deemed to require the Reserve Bank of India or any other bank aforesaid to satisfy itself that the conditions imposed by this order are being observed before any amounts are released in favour of the Kashi Nath Seth Bank Ltd.

5. The Central Government hereby further directs that the Kashi Nath Seth Bank Ltd. may, during the period of moratorium, return and bills which have remained unrealised to the persons entitled to receive them on a request being made in this behalf by such persons, if the bank has no right or title to, or interest in, such bills.

6. The Central Government hereby also directs that the Kashi Nath Seth Bank Ltd. may, release or deliver goods or securities which have been pledged, hypothecated or mortgaged or otherwise charged to it against any loan, cash credit or overdraft—

- (i) in any case in which full payment towards all the amounts due from the borrower or borrowers, as the case may be, has been received by the bank, unconditionally; and
- (ii) in any other case, to such an extent as may be necessary or possible, without reducing the proportions of the margins on the said goods or securities below the stipulated proportions or the proportions which were maintained before the order of moratorium came into force, whichever may be higher.

[No. 17/20/93-BOA]

N. N. MOOKERJEE, Jt. Secy.

